

[.....وَصَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُوْنِي أَصَلِّي..... صحيح بخاری: 631]

[اور نماز اسی ترھ پکوں جس ترھ موکوں (مومد) کو پکے دکھتے هو]

مرے موملانو کائیوں ! شئیانی وسوسوں کے باوجود اپنی موت سے پہلے پہلے سیکر اک مرتبا اس ترھیر کو اوصول تا آخیر لاکمی، لاکمی، لاکمی پک لے!

اللہ کے مہبب، ہمارے نہایت ہی شفیق آکا، ایمامہ آکام، ایمامہ کائنات سخیدل اوصولی و ل آخیری، ایمامو و آتامول انبیاء و ل مرسلی، شفیول مومبلی، رمتول لیل آلامی، سخیدلنا مومدور رسولللاہ کی مومل نماز-ع-مومدی "تکبیر ترھیرما سے لکر سلام تک" سہی ہالت میں کتوب-ع-اہادیس میں مہفوک اور ہمارے امول کے لیک بیلکول آسان ہ

نوٹ: ی ترھیر سیکر انھی کتوب سے "تکریب 140 سہیل اسناد اہادیس کی رونی میں" ہ جنکے مستند ہونے پر بر سگری پاک و ہند میں "اہلےسunnat کا دواہ کرنے والے" تونوں مسلک: 1. برلوی 2. دہوبندی 3. سلفی (اہلے ہدیس) ن سیکر موفیک ہ بلیک ان کتوب کی ہر مسلک کی الگ الگ رڈ کبان میں ترکیم بھی بازار میں با آسانی دستیاہ ہ .

نوٹ: اس اہم ترھیر میں مشید-ع-کامل، ایمام ول انبیاء ول مرسلی کی تمام سہیہ ول اسناد اہادیس کے نمبرس ولماہ ہرمن اور برت کی انٹرنیشنل نمبرنگ کے ین موابک ہ.

نماز-ع-مومدی کا "واہد سunnat तरीکا" [مستند کتوب-ع-اہادیس میں موجد "سہیہ اہادیس" کی رونی میں]

❶ **ترجوما سہیہ ہدیس:** ابو سلمہ بن ابورہمن تابی کا بیان ہ کی سخیدلنا ابو ہریراہ تمام نمازوں میں تکبیر (اللہ اکبر) کہا کرتے تھے خوا فز یا نفیل، رمزان کا مہینا ہو یا کوئی اور مہینا. چونچے جب آپ نماز کے لیک کھے ہوتے تو تکبیر کھتے، فیر رکوع میں آتے تو تکبیر کھتے، فیر رکوع سے سر اٹاتے تو کھتے، رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ، فیر سجدے کے لیک کھتے تو تکبیر کھتے، فیر سجدے سے سر اٹاتے تو تکبیر کھتے، فیر دوسرے سجدے میں آتے تو تکبیر کھتے، فیر دوسرے سجدے سے سر اٹاتے تو تکبیر کھتے، فیر دوسری رکاءات کے باء والے تشاہد سے اٹتے تو تکبیر کھتے، فیر آپ تمام رکاءات میں اسی ترھ تکبیر کھتے یھاں تک کی آپ نماز سے فارغ ہو آتے. فیر نماز سے فارغ ہونے کے باء فرماتے: "اس آات کی کسم جسکے ہاتھ میں مری آان ہ میں تم سب سے آآا رسولللاہ کی نماز سے موابک رختا ہ. آپ اسی ترھ نماز پکے رھے یھاں تک کی دنیا سے تشریف لے گے".

نوٹ: ی ہدیس "تکبیرات کا بیان" والے باب میں ہ، اسلک اس میں پہلی تکبیر کے ساتھ بھی ہاتھ اٹانے کا کیکر نہیں ہ.

[صحيح بخاری: 803، صحيح مسلم: 867]

نوٹ: بنو مریاہ کے شریر گورنروں نے جب بلند تکبیر کھنے کی سunnat کھڈ دی تو سخیدلنا ابو ہریراہ نے ہدیس پر کسم کائی.

[صحيح بخاری: 784 تا 789، صحيح مسلم: 867 تا 873]

❷ **ترجوما سہیہ ہدیس:** دوسرے خلیفا سخیدلنا ممر فاروخ کے پوتے سالیم بن ابوللاہ تابیہ اپنے والید سخیدلنا ابوللاہ بن ممر کا بیان نکل فرماتے ہ "میں نے دیکھا کی رسولللاہ جب نماز شرو فرماتے تو تکبیر (اللہ اکبر) کھتے اور اپنے دونوں ہاتھ کٹھوں تک اٹاتے (یانی رفلیدائن کرتے). اور جب رکوع کے لیک تکبیر کھتے تو یہی (رفلیدائن کا) امول کرتے اور جب رکوع سے سر اٹاتے تو بھی یہی (رفلیدائن کا) امول کرتے اور رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ کھتے تھے. اور سجدوں میں (رفلیدائن کا) ی امول نہیں کرتے تھے."

[صحيح بخاری: 735، صحيح مسلم: 861، جامع ترمذی: 255 اور 256، سنن ابی داؤد: 722، سنن نسائی: 879، سنن ابن ماجہ: 858]

نوٹ: ایمام ابو اسیا تیرمیزی (ال موابفہ - 279ھ) لیکتے ہ: "ہدیسی ابنے ممر "حسن سہیہ" ہ..... اور (ایمام ابو ہنیفا رحمہ اللہ کے شاگرد) ایمام ابوللاہ بن مبارک کا کول ہ کی آو شکس نماز میں ہاتھ اٹاتا (رفلیدائن کرتا) ہ تو اسکی (اوپر بیان کی گئی) ہدیس-ع-ابن ممر سابت ہ جسے جھری نے بواستا سالیم ان کے والید (سخیدلنا ابن ممر) سے ریاات کیا. اور سخیدلنا ابن مسود کی و ہدیس (جامع ترمذی: 257) سابت ہی نہیں ہ کی نبی نماز کے آگاز میں ہی ہاتھ اٹاتے تھے."

[جامع ترمذی: حدیث 256 کے تحت]

نوٹ: ایمام ابو داؤد رحمہ اللہ (275ھ) نے بھی سخیدلنا ابن مسود کی اسی ہدیس پ لیکھا: "ی ہدیس ان الفاز کے ساتھ سہیہ نہیں."

[سنن ابی داؤد: حدیث 748 کے تحت]

نوٹ: سخیدلنا ابن ممر جس شکس کو دیکھتے کی و (سستی کی وکھ سے) رکوع سے پہلے اور رکوع کے باء "رفلیدائن" نہیں کرتا تو اسے ککریاں مارا کرتے تھے.

[جُزُوعُ الْيَدَيْنِ: 15]

❸ **ترجوما سہیہ ہدیس:** چوتھے خلیفا سخیدلنا مولا (مہبب) الی ال مورتا بیان فرماتے ہ. "رسولللاہ جب نماز کے لیک کھے ہوتے تو تکبیر کھکر اپنے دونوں ہاتھ کٹھوں تک اٹاتے (یانی رفلیدائن کرتے) اور کیرآت ختم کرکے رکوع میں آتے ہو بھی یہی امول کرتے اور جب رکوع سے اٹ کر بھی یہی امول کرتے. مگر بٹھنے کی ہالت (جلسا و تشاہد) میں ی امول نہیں کرتے تھے. اور جب سجدے میں (دو رکاءات) پک کر کھے ہوتے تو اسی ترھ اپنے ہاتھوں کو بلند کرتے اور تکبیر کھتے تھے."

[جامع ترمذی: 3423، سنن ابن ماجہ: 864]

نوٹ: سجدوں میں "رفلیدائن" کرنے والی ہدیس کی سند کتاواہ کی تڈلیس کی وکھ سے کڈف ہ، الکتا سخیدلنا انس سے ی امول سے سابت ہ لہا آا بیدات نہیں.

[جُزُوعُ الْيَدَيْنِ: 105]

❹ **ترجوما سہیہ ہدیس:** مومد بن ممر و تابیہ کا بیان ہ. "میں نے سخیدلنا ابو ہمید ال ساادی کو 10 سہابا کرام

2 के दरमियान, जिनमें अबु क़तादाह भी थे, कहते हुए सुना कि मैं रसूलल्लाह ﷺ की नमाज़ के बारे में तुम सब से ज़्यादा जानता हूँ. उन्होंने कहा अच्छा बयान करो! फिर सय्यिदना अबु हमीद ने बयान किया: रसूलल्लाह ﷺ जब भी नमाज़ के लिए खड़े होते तो अपने दोनों हाथ कन्धों के बराबर उठाते, फिर तकबीर कहते, फिर क़िरआत करते, फिर तकबीर कहकर हाथ कन्धों के बराबर उठाते, फिर रकूअ करते और अपनी हथेलियाँ घुटनों पर रख देते गोया की उन्हें पकड़ा हो, हाथों को कमान की तरह तान कर पहलुओं से दूर रखते कमर सीधी करते न तो सर को झुकाते और न ही बुलंद करते, फिर सर उठाते **سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ** कहकर अपने हाथों को कन्धों के बराबर उठाते और इत्मिनान के साथ सीधे खड़े हो जाते, फिर तकबीर कहकर ज़मीन की तरफ झुकते, सज्दे में नाक और पेशानी को ज़मीन पर रखते, अपने हाथों को पहलुओं से दूर रखते, हथेलियों को कन्धों के बराबर रखते और रानों को पेट के साथ न लगने देते, पांव की उंगलियां (क़िबला की तरफ) खोलते, फिर सर उठाते, बाएँ पांव को मोड़ते और उसी पर बैठ जाते और इस क़दर इत्मिनान से (जल्से में) बैठते की हर हड्डी अपनी जगह पर आ जाती, फिर सज्दे करते, फिर तकबीर कहकर उठते, बायाँ पांव मोड़कर इस पर बैठते और इस क़दर इत्मिनान से (जल्से इस्तराहत में) बैठे रहते की हर हड्डी अपनी जगह पर आ जाती, फिर खड़े होते और दूसरी रकआत इसी तरह मुकम्मल फ़रमाते, फिर जब दूसरी रकआत के बाद खड़े होते तो तकबीर कहकर अपने दोनों हाथ कन्धों के बराबर उठाते जैसा की नमाज़ के शुरू करते वक़्त किया था, फिर आप ﷺ अपनी बाकी नमाज़ में भी ऐसा ही करते हत्ता की जब आखरी सज्दा होता के जिसके बाद सलाम फेरना होता तो आप ﷺ **तवर्क़** करते (यानि अपने बाएँ पांव को अपने दाएँ पांव के नीचे से बहार निकाल कर बाएँ सिरे (कूलेह) पर बैठ जाते, और दाएँ पांव के पंजों को क़िबला रुख कर लेते), दाएँ हाथ को दाएँ घुटने और बाएँ हाथ को बाएँ घुटने पर रखते और शहादत की ऊंगली से इशारा फ़रमाते, और फिर सलाम फेरते थे. उन सब (10 सहाबा किराम) ने कहा तुमने बिल्कुल सच बताया, आप ﷺ इस तरह नमाज़ पढ़ा करते थे."

नोट: इमाम अबु ईसा तिरमिज़ी رحمہ اللہ علیہ लिखते हैं: "ये हदीस "हसन सहीह" है" [**جامع ترمذی: 304, سنن ابی داؤد: 730 اور 734, سنن ابن ماجہ: 1061**]
नोट: "कीमिया ए सआदत" में **इमाम मुहम्मद गज़ाली** رحمہ اللہ علیہ (मृत्यु-505ह) ने और "गुनियतुल तालबीन" में **शेख अब्दुल कादिर ज़िलानी** رحمہ اللہ علیہ ने भी नमाज़ का यही तरीका लिखा है.

नमाज़-ए-मुहम्मदी का "सुन्नत कियाम" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

1 रसूलल्लाह ﷺ अपनी नमाज़ तकबीर **अल्लाहु अकबर** कहकर शुरू फ़रमाते और दोनों हाथ कन्धों तक उठाते (यानि रफुल्यादैन करते).
[صحيح بخاری: 735, صحيح مسلم: 861]

नोट: रसूलल्लाह ﷺ का नमाज़ के इब्तिदा में हाथों से कानों का पकड़ना या छूना साबित नहीं. मगर कानों के बराबर हाथ उठाना (यानि रफुल्यादैन करना) ज़रूर साबित है.
[صحيح مسلم: 865]

2 रसूलल्लाह ﷺ के मुबारक ज़माने में (आप ﷺ की तरफ से) लोगों को इस बात का हुक्म दिया जाता था कि वो (कियाम) नमाज़ में दायाँ हाथ बाएँ ज़िराआ पर रखे. और खुद आप ﷺ भी नमाज़ में अपना दायाँ हाथ अपनी बाएँ हथेली, कलाई, और साआद पर रखा करते थे.
[صحيح بخاری: 740, الموطاء للمالك: 377, 159/1, صحيح مسلم: 896, سنن نسائي: 890]

नोट: कोहनी के सिरे से दर्मियानी ऊंगली के सिरे का हिस्सा "ज़िराआ" और कोहनी से हथेली तक का हिस्सा "साआद" कहलाता है.
[عربي ڈکشنری القاموس: صفحہ نمبر 568 اور 769]

नोट: दाएँ हाथ को, बाएँ हाथ की पूरी ज़िराआ (हथेली, कलाई और हथेली से कोहनी तक) पर रखा जाये तो खुद बखुद नाफ़ से ऊपर "सीने के दर्मियानी हिस्से" तक आ जाता है और यही बात सहीह हदीस से साबित है, चुनाँचे सय्यिदना हालिब ताई رضی اللہ عنہ बयान करते हैं की रसूलल्लाह ﷺ अपना दायाँ हाथ अपने बाएँ हाथ पर, सीने पर रखा करते थे.
[مُسنَد احمد: 22017, 226/5]

नोट: नाफ़ से नीचे हाथ बाँधने वाली हदीस की सनद में अब्दुर्रहमान बिन इस्हाक़ अल कूफ़ी को खुद इमाम दाऊद ने ज़ईफ़ लिखा और उसकी तमाम शवाहिद भी ज़ईफ़ हैं
[سنن ابی داؤد: 756]

नोट: कयाम में "हाथ छोड़ने" वाली हदीस की सनद में खसीद बिन ज़ेहरीर झूठा रआवी है, अलबत्ता सय्यिदना इब्ने जुबैर رضی اللہ عنہ से ये अमल साबित है लिहाज़ा बिदअत नहीं.
[المُصنف لابن ابی شیبہ: 3950]

3 रसूलल्लाह ﷺ तकबीर के बाद ये दुआ पढ़ने का हुक्म फ़रमाते: **سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ** तू पाक है और तेरी तारीफ़ के साथ, तेरा नाम बरकतों वाला और तेरी शान बुलंद है तेरे सिवा कोई और मअबूद नहीं.
[صحيح مسلم: 892, جامع ترمذی: 242, سنن نسائي: 1137]

नोट: रसूलल्लाह ﷺ से साबित ये दुआ भी पढ़ सकते हैं: **اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ...**
[صحيح بخاری: 744, صحيح مسلم: 1354]

4 रसूलल्लाह ﷺ सना पढ़ने के बाद ये दुआ पढ़ते थे: **أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّبِيحِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ مِنْ هَمَزَةٍ وَنَفْثَةٍ وَنَفْثَةٍ** (समीअ अलीम की पनाह माँगता हूँ मैं शैतान मरदूद के वस्वसो (दिलाने) से, और तकबीर (पे अमादा करने) से, और फूकों (के ज़रीए जादू कर देने) से.)
[سنن ابی داؤد: 775]

नोट: सिर्फ़ इतनी दुआ पढ़ लेना भी बिल्कुल सहीह है. **أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ**
[صحيح بخاری: 6115, صحيح مسلم: 6646]

5 रसूलल्लाह ﷺ इसके बाद ये दुआ पढ़ते थे **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के नाम के साथ (शुरू) जो रहमान और रहीम है
[سنن نسائي: 906]

नोट: कसरत-ए-दलाईल की रु से राजहे कौल यही है की रसूलल्लाह ﷺ अमुमन **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** सिरअन (यानि आहिस्ता आवाज़ में) ही पढ़ते थे
[صحيح مسلم: 890]

6 रसूलल्लाह ﷺ इसके बाद "सूरा फातिहा" की तिलावत फ़रमाया करते थे **إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ** ० **مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ** ० **الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** ० **صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ** ० **غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ** ०
إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ० **صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ** ० **غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ** ०
 जो रहमान व रहीम है, यौम-ए-जज़ा का मालिक है, (ए رضی اللہ عنہ) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं, दिखा हमें सीधा रास्ता, रास्ता उन लोगों का जिन पर तूने इनाम किया, न की उन लोगों का रास्ता जिन पर गज़ब किया गया और जो गुमराह हैं.
[صحيح بخاری: 743, صحيح مسلم: 892]

नोट: रसूलल्लाह ﷺ "सूरा फातिहा" ठहर ठहर कर (यानि थोड़े वक़फे से अलग अलग) पढ़ते थे, और हर आयत पर वक़फा भी फ़रमाया करते थे.
[مُسنَد احمد: 26513, 288/6]

- 3 नोट:** रसूलल्लाह ﷺ ताकीदन इर्शाद फ़रमाते: जो शक्स "सुरातुल फातिहा" नहीं पढ़ता उसकी नमाज़ नहीं होती" मजीद ये भी फ़रमाते: "इमाम के पीछे क़िराआत मत किया करो सिवाए "सुरातुल फातिहा" के क्योंकि जो "सुरातुल फातिहा" नहीं पढ़ता उसकी नमाज़ ही नहीं होती: [صحیح بخاری: 756, صحیح مُسلم: 874, جامع ترمذی: 311, سنن ابی داؤد: 823 اور 824]
- नोट:** रसूलल्लाह ﷺ के सहाबी सय्यिदना अबु हुरैराह ؓ नमाज़े बा जमाआत में इमाम के पीछे मुक्तदी को भी आहिस्ता आवाज़ में सिर्फ "सुरातुल फातिहा" पढ़ने का हुकुम दिया करते. [صحیح مُسلم: 878]
- 7** रसूलल्लाह ﷺ "सुरातुल फातिहा" के बाद जाहरन (ऊँची क़िराआत वाली) नमाज़ में "आमीन" भी ऊँची आवाज़ से कहते थे. [سنن ابی داؤد: 932 اور 933, سنن نسائی: 880]
- नोट:** ज़हरी नमाज़ में सिरअन (आहिस्ता) "आमीन" कहने की हदीस के इज़तराब को इमाम तिरमिज़ी رحمه الله ने खूब वाज़ह फरमा कर "आमीन" जाहरन (ऊँची) कहने को राज़े कहा. [جامع ترمذی: 248]
- नोट:** सिरअन (आहिस्ता आवाज़ वाली) नमाज़ों में "आमीन" सिरअन (आहिस्ता) कहने का तमाम मुसलमानों का इजमाअ है, और इजमाअ हुज्जत है. [النساء: 115], [المُستدرک للحاکم: 399]
- 8** रसूलल्लाह ﷺ सूरत से पहले ये दुआ पढ़ते: بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ के नाम के साथ (शुरू) जो रहमान और रहीम है [صحیح مُسلم: 894]
- 9** रसूलल्लाह ﷺ पहली दो रकआतों में सुरातुल फातिहा के साथ और सूरत भी या कुरआन का कुछ हिस्सा पढ़ते थे. [صحیح بخاری: 762, صحیح مُسلم: 1013, سنن ابی داؤد: 859]
- नोट:** रसूलल्लाह ﷺ आखरी दो रकआतों में सिर्फ सुरातुल फातिहा पढ़ते और कभी कभी साथ कोई सूरत भी मिला लेते थे. [صحیح بخاری: 776, صحیح مُسلم: 1013 اور 1014]
- 10** रसूलल्लाह ﷺ क़िराआत के बाद रकूअ से पहले "सक्ता" (यानि कुछ देर तक के लिए वकफा) भी फ़रमाया करते थे. [سنن ابی داؤد: 777 اور 778, سنن ابن ماجه: 845]

नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ का "सुन्नत रकूअ" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

- 11** रसूलल्लाह ﷺ रकूअ के लिए तकबीर कहते तो दोनों हाथ कन्धों तक और कभी कानों तक उठाते, अपने हाथों से घुटनों को मज़बूती से पकड़ते, अपनी कमर झुकाते न तो सर मुबारक पेट से ऊँचा होता और न नीचा, बल्कि पेट की सीध में बिल्कुल बराबर होता, और दोनों हाथ अपने पहलुओं से दूर होते थे. [صحیح بخاری: 735 اور 828, صحیح مُسلم: 865, سنن ابی داؤद: 734]
- 12** रसूलल्लाह ﷺ से रकूअ में दर्ज ज़ैल दुआएँ साबित हैं, लिहाज़ा इनमें से कोई एक दुआ कमज़ कम 3 मर्तबा या तमाम ही पढ़ ले. [المُصنّف لابن ابی شیبہ: 2571, 225/1]
- I** रसूलल्लाह ﷺ ये दुआ पढ़ने का हुकुम देते: سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ [पाक है मेरा रबब अज़ीम] [صحیح مُسلم: 1814, سنن ابی داؤद: 869, سنن ابن ماجه: 887]
- II** रसूलल्लाह ﷺ अपने रकूअ और सज्दों, दोनों में ही ये दुआ कसरत से पढ़ा करते थे: سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي [صحیح بخاری: 794, صحیح مُسلم: 1085]
- III** رَسُوْلُ اللهِ ﷺ हर बुराई से बिल्कुल पाक, तमाम नकाईस से बिल्कुल पाक और, मलायका और रूह का रबब [صحیح مُسلم: 1091]

नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ का "सुन्नत कौमाह" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

- 13** रसूलल्लाह ﷺ रकूअ से सर मुबारक उठाते तो दोनों हाथ कन्धों तक और कभी कानों तक उठाते और ये दुआ पढ़ते: سَمِعَ اللَّهُ لَيْنَ حَمْدَهُ، رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ [صحیح بخاری: 735, صحیح مُسلم: 861 اور 865]
- नोट:** अफ़ज़ल यही है कि मुक्तदी भी नमाज़ में इमाम के पीछे ये दुआ पूरी ही पढ़े سَمِعَ اللَّهُ لَيْنَ حَمْدَهُ، رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ [المُصنّف لابن ابی شیبہ: 2600, 227/1]
- 14** रसूलल्लाह ﷺ के पीछे एक आदमी ने पढ़ा: رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ [ए रबब हमारे! और हमद तेरे लिए, हमद बहुत ज़्यादा पाक व मुबारक.] इस पर रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "मैंने 30 से ज़्यादा फ़रिशतों को इसका सवाब लिखने में जल्दी करते और एक दूसरे पे सबक़त लेते हुए देखा है [صحیح بخاری: 799]
- 15** कौमाह में हाथ सीधे छोड़ने पर उम्मत का अम्ली तवातर और इजमाअ है, बल्कि अरकान-ए-नमाज़ में हाथों की सुन्नत हालत बताने वाली हदीस में भी इसका इशारा मिलता है. [سنن نسائی: 890]

नमाज़-ए-मुहम्मदी ﷺ का "सुन्नत सज्दा" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

- 16** रसूलल्लाह ﷺ तकबीर कहते हुए सज्दे के लिए झुकते तो आप ﷺ फ़रमाते मुझे सात हड्डियों पर सज्दा करने का हुकुम दिया गया है, पेशानी नाक, दो हाथ, दो घुटने, और दो पांव मजीद फ़रमाया के जब तुम सज्दा करो तो ऊँट की तरह न बैठो (बल्कि) अपने दोनों हाथों को घुटनों से पहले ज़मीन पर रखो: [صحیح بخاری: 803 اور 812, صحیح مُسلم: 868, سنن ابی داؤद: 840]
- नोट:** सज्दे में जाते वक़्त पहले घुटने और फिर हाथ रखने वाली हदीस की सनद शरीक बिन अब्दुल्लाह काज़ी की तदलीस की वज़ह से ज़ईफ़ और उसकी तमाम शवाहिद भी ज़ईफ़ हैं: [سنن ابی داؤद: 838]
- 17** रसूलल्लाह ﷺ सज्दे में नाक और पेशानी, ज़मीन पर (खूब) जमा कर रखते, अपने बाजूओं को अपने पहलुओं से दूर रखते और दोनों हथेलियाँ कन्धों के बराबर (ज़मीन) पर रखते. और कभी अपनी दोनों हथेलियों को अपने कानों के बराबर रखते, और सज्दे में अपने हाथ (ज़मीन पर) रखते तो न तो उन्हें बिछाते और न (बहुत) समेटते, और आप ﷺ अपनी पांव की उँगलियों को क़िबला रुख रखते और पांव की दोनों एड़ियाँ मिला लेते थे. [صحیح بخاری: 828, صحیح مُسلم: 1105, سنن ابی داؤद: 730 اور 734, سنن نسائی: 890, صحیح ابن خزيمة: 654]
- 18** रसूलल्लाह ﷺ हुकुम फ़रमाते "सज्दे में ऐतादाल करो, कुत्ते की तरह बाजू न बिछाओ, अपनी हथेलियाँ ज़मीन पर रखो और कोहिनियाँ उठा लो." [صحیح بخاری: 822, صحیح مُسلم: 1104]
- नोट:** इस सहीह हदीस के वाज़ेह हुकुम के तेहत औरतें भी सज्दों में बाजू न बिछाएँ. मजीद ये की मर्दा और औरतों की नमाज़ के

4 तरीکے में कोई फ़र्क नहीं हैं. और इस ज़िम्न में जितनी भी रिवायत पेश की जाती है वो सब की सब ज़ईफ़ है जबकि सही हदीस में वाजेह हुकुम है "नमाज़ उसी तरह पढ़ों जिस तरह मुझे (मुहम्मद ؐ) को पढ़ते हुए देखते हो. [صحیح بخاری : 631]

19 رسولل्लाह ؐ سے سجدوں में दर्ज ज़ैल दुआएँ साबित हैं. लिहाज़ा इनमें से कोई एक दुआ कमज़ कम 3 मर्तबा या तमाम ही पढ़ ले. [المُصنّف لابن ابی شیبۃ : 2571، 225/1]

1 رسولل्लाह ؐ ये दुआ पढ़ने का हुकुम देते: ﴿سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى﴾ پاک है मेरा रब्बी आला [صحیح مسلم : 1814، سنن ابی داؤد : 869، سنن ابن ماجه : 887]

11 ﴿سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ ۝ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي﴾
[इन दुआओं का हवाला और तर्जुमा "सहीह रकूअ" वाले हिस्से में देख ले]

नमाज़-ए-मुहम्मदी ؐ का "सुन्नत जल्सा" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

20 رسولल्लाह ؐ तकबीर कहकर सज्दे से सर मुबारक उठाते और (जल्से में) अपना बायाँ पांव बिछाकर उसपर बैठ जाया करते थे. [صحیح بخاری : 827، سنن ابی داؤد : 730]

21 رسولल्लाह ؐ जल्से में ये दुआ पढ़ते: ﴿رَبِّ اغْفِرْ لِي رَبِّ اغْفِرْ لِي﴾ (ऐ रब्ब! मुझे बकश दे) [سنن ابی داؤد : 874، سنن نسائی : 1146، سنن ابن ماجه : 897]

नोट: ﴿اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَارْحَمْنِي وَارْحَمْنِي﴾ के बाद ये दुआ पढ़ना भी बिल्कुल सही है: ﴿اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي رَبِّ اغْفِرْ لِي﴾ और मुझे पर रहम फ़रमा, और मेरी रहनुमाई फ़रमा, और मुझे आफ़ियत में रख, और मुझे रिज्क अता फ़रमा दे [صحیح مسلم : 6850، المُصنّف لابن ابی شیبۃ : 266/2، 8838]

22 رسولल्लाह ؐ दूसरे सज्दे के बाद भी बैठने (यानि जल्सा ही इस्तराहत) को न सिर्फ़ नमाज़ के सुकून का हिस्सा करार देते, बल्कि उसका हुकुम भी फ़रमाया करते: [صحیح بخاری : 6251]

23 رسولल्लाह ؐ ताक़ रकाआतों में जल्सा ही इस्तराहत के बाद ज़मीन पर दोनों हाथ रख कर ऐतामाद करते हुए अगली रकाआत के लिए उठा करते थे. [صحیح بخاری : 823 और 824]

नमाज़-ए-मुहम्मदी ؐ का "सुन्नत तशहुद्" [मुस्तनद कुतुब-ए-अहादीस में मौजूद "सहीह अहादीस" की रौशनी में]

24 رسولल्लाह ؐ जब भी तशहुद् के लिए बैठते तो आप ؐ अपने दोनों हाथ अपनी दोनों रानों पर रखते कभी दायाँ हाथ दाएँ घुटने और बायाँ हाथ बाएँ घुटने पर रखते. फिर दाएँ अँगूठे को दर्मियानी ऊँगली से मिलकर हल्का बनाते. आप ؐ अपनी शहादत की ऊँगली को थोड़ा सा झुका देते और ऊँगली से इशारा करते हुए इसके साथ तशहुद् में दुआ करते और ऊँगली को (आहिस्ता आहिस्ता) हरकत भी देते और इसकी तरफ देखते रहते थे. [صحیح مسلم : 1308 और 1310، سنن ابی داؤद : 991، سنن نسائی : 1161، 1162 और 1269، سنن ابن ماجه : 912]

नोट: لا إله إلا الله पर ऊँगली उठाना और لا إله إلا الله पर रख देना किसी हदीस से साबित नहीं. इसके बरअक्स सहीह अहादीस से ये साबित हुआ के मुकम्मल तशहुद् में हल्का बनाकर शहादत की ऊँगली मुसलसल उठाई जाये.

25 رسولल्लाह ؐ तशहुद् में दर्ज ज़ैल दुआ को बिल्कुल कुरआन की तरह ताकीदन सिखाया करते थे. التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
﴿اللَّهُمَّ﴾ के ही लिए में तमाम तहफ़ी (जबानी इबादतें). और नमाज़ें (बदनी इबादतें), और पाक चीज़ें (माली इबादतें) सलाम हो ऐ नबी! आप ؐ पर ؐ की रहमत और उसकी बरकतें हो. सलाम हो हम पर और ؐ के नेक बन्दों पर. मैं गवाही देता हूँ के नहीं कोई मआबूद सिवाए ؐ के और गवाही देता हूँ मुहम्मद ؐ उसके बन्दे है और उसके रसूल हैं [صحیح بخاری : 1202، صحیح مسلم : 897]

26 رسولल्लाह ؐ आखरी तशहुद् में बाएँ पांव को दाएँ पांव के नीचें से निकाल कर बाएँ कूल्हें पर बैठ जाते, और दाएँ पांव का पंजा किबला रुख कर लेते [صحیح بخاری : 828]

27 رسولल्लाह ؐ तशहुद् के लिए ये दरूद शरीफ़ भी सिखाया करते: اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مُجِيدٌ، اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مُجِيدٌ
﴿اللَّهُمَّ﴾ रहमत भेज मुहम्मद ؐ पर और आली मुहम्मद ؐ पर जैसा की तूने रहमतें नाज़िल फरमाई इब्राहीम ؑ पर और आली इब्राहीम ؑ पर बेशक तू तारीफ़ वाला बुजुर्गी वाला है. ﴿اللَّهُمَّ﴾ बर्कतें नाज़िल फरमा मुहम्मद ؐ पर और आली मुहम्मद ؐ पर जैसा की तूने बर्कतें भेजी इब्राहीम ؑ पर और आली इब्राहीम ؑ पर बेशक तू तारीफ़ वाला बुजुर्गी वाला है. [صحیح بخاری : 3370، صحیح مسلم : 908]

28 رسولल्लाह ؐ तशहुद् में इस दुआ का हुकुम फ़रमाते: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ
﴿اللَّهُمَّ﴾ में तेरी पनाह माँगता हूँ जहन्नम के अज़ाब से, और कब्र के अज़ाब से, और ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से, मसीह दज्जाल के शरीर फ़ितने से [صحیح مسلم : 1324]

29 رسولल्लाह ؐ की अक्सर अक्कात में दुआ इन्ही अल्फाज़ में ही हुआ करती थी. اللَّهُمَّ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ
﴿اللَّهُمَّ﴾ ऐ रब्ब हमारें! अता फरमा हमें दुनिया में भलाई और आखिरत में भलाई, और बचा ले हमें (दोज़ख की) आग के अज़ाब से. [صحیح بخاری : 6389، صحیح مسلم : 6840]

नोट: رسولल्लाह ؐ ने इन दुआओं के अलावा भी कोई और दुआ जो कुरआन व सुन्नत से साबित हो पढ़ने की इजाज़त मरहमत फरमाई है. [صحیح بخاری : 835، صحیح مسلم : 897]

30 رسولल्लाह ؐ दुआ के बाद दाएँ और बाएँ दोनों तरफ़, इन्ही अल्फाज़ के साथ सलाम फ़ेर कर नमाज़-ए-मुहम्मदी ؐ मुकम्मल फ़रमाते थे: ﴿تُحَمَّدُ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مُجِيدٌ﴾
[صحیح بخاری : 838، صحیح مسلم : 1315، جامع ترمذی : 295، سنن ابی داؤد : 996، سنن نسائی : 1320، سنن ابن ماجه : 914]

आखरी नसीहत जैद ताबी رحمه الله का बयान है सय्यिदना हुज़ैफ़ा बिन यौमान ने एक शक्स को देखा जो नमाज़ का रकूअ और सज्दा (नमाज़-ए-मुहम्मदी ؐ के मुताबिक) मुकम्मल नहीं अदा कर रहा था तो आप ؐ ने फ़रमाया: "तूने नमाज़ पढ़ी ही नहीं और अगर तू इसी तरह पढ़ता रहा तो उसी तरीक़े पर न मरेगा जो ؐ ने मुहम्मद ؐ को सिखाया है." [صحیح بخاری : 791]